

Satyavachan

Prog. No. 331

Acts. 1:4-26

मित्रो नमस्कार!

प्रेरितों के काम की पुस्तक के अध्ययन में हम देख रहे हैं कि यीशु की सेवा उसके पुनरुत्थान के बाद पवित्र आत्मा के द्वारा उसके प्रेरितों के माध्यम से अधिक प्राभावी चल रही है और आज हमारे द्वारा भी अपने अपने स्थानों में चल रही हैं

सुसमाचार प्रचार के केन्द्र भी यही है कि मसीह मृतकों में से जी उठा हैं

प्रेरितों के काम – 1:4 (कृप्या पढ़ें)

चौथे पद पर आकर वाक्य पूरा होता है चारों पद एक ही वाक्य हैं प्रेरितों को पवित्र आत्मा के आगमन की प्रतीक्षा करना था उसकी आज्ञा थी कि वे उस समय तक प्रतीक्षा करें

प्रेरितों के काम – 1:5 (कृप्या पढ़ें)

जीवित यीशु ज़िंको पर प्रगट हुआ और उन्हें यह आज्ञा दी उसने कहा कि उनके साथ एक घटना घटेगी अधिक दिन नहीं होंगे कि वे पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाएंगे पवित्र आत्मा का यह बपतिस्मा परमेश्वर पिता की प्रतीक्षा थी यीशु ने उन्हें पहले ही सचेत कर दिया था

यह स्पष्ट करना अति महत्वपूर्ण है कि यह पानी का बपतिस्मा नहीं है पानी का बपतिस्मा मात्र एक संस्कार है यह पवित्र आत्मा का बपतिस्मा है जो वास्तविक बपतिस्मा है यही वह बपतिस्मा है जो विश्वासी को विश्वासीयों के देह में जोड़ता है इस देह को कलीसिया भी कहते हैं

अध्याय 2 में जहां पित्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा के अवतरण का उल्लेख हैं, हम देखेंगे कि वे पवित्र आत्मा से भर गये थे पवित्र आत्मा से भरना आवश्यक था कि वे सेवा कर पाएं सेवा के लिए पवित्र आत्मा से भरने का अर्थ था कि पवित्र आत्मा कि अन्य सब सेवाएं भी की गई थीं

प्रेरितों के काम – 1:6 (कृप्या पढ़ें)

कुछ टीकाकरण शिष्यों के इस प्रश्न को उचित नहीं मानते हैं उनके अनुसार शिष्यों की यह भूल थीं मेरे विचार में यीशु ने उन्हें जो उत्तर दिया उससे तो यह प्रकट होता है कि उन्होंने यह प्रश्न पूछकर को भूल नहीं की थीं उनका यह प्रश्न स्वभाविक ही था और प्रभू ने वैसा ही उत्तर भी दिया उसने न तो उन्हें झिड़का और न कहा कि यह कैसा मूर्खता भरा प्रश्न हैं शिष्यों का पालन-पोषण पुराने नियम में हुआ था अतः वे मसीह के आगमन की प्रतीक्षा में थे वे यही मानते थे कि मसीह आएगा तो वह इस पृथ्वी पर अपना राज्य स्थापित करेगा यही उनकी आशा थी और यही आज इस पृथ्वी की आशा हैं परमेश्वर ने इस पृथ्वी को त्यागा नहीं हं यद्यपि यह पृथ्वी परमेश्वर के लिए इतनी छोटी है कि वह इसे कालीन के नीचे दबा दे परन्तु वह ऐसा नहीं करेगा इस पृथ्वी के लिए परमेश्वर के पास अनन्त उद्देश्य हैं वे परमेश्वर के राज्य की चर्चा कर रहे थे अर्थात् दाऊद के घराने का पुनः स्थापना पुनरुत्थान के बाद उसने उनसे ये बातें कीं पद 3 में हम देखते हैं कि उसने परमेश्वर के राज्य से सम्बन्धित बातें कीं

प्रेरितों के काम – 1:7 (कृप्या पढ़ें)

उसने उन पर प्रगट किया कि इस समय राज्य की स्थापना नहीं की जाएगी इस समय वह अपने नाम के निमित्त मनुष्यों को एकत्र करेगा—कलीसिया बनाएगा अध्याय 15 में जब शिष्य पहली बार यरुशलेम सभा में एकत्र हुए थे तब याकूब ने इस तथ्य का उल्लेख किया— 15:14–18, “शमौन ने बताया कि परमेश्वर ने पहले पहले अन्य जातियों पर कैसी कृपा दृष्टि की कि उनमें से अपने नाम के लिए एक लोग बना लें इससे भविष्यद्वक्ताओं की बातें भी मीलती हैं, जैसा की लिखा है, ‘इसके बाद मैं फिर आकर दाऊद का गिरा हुआ डेरा उठाऊंगा और उसके खंडहरों को फिर बनाऊंगा और उसे खड़ा करूंगा, इसलिए शेष मनुष्य अर्थात् सब अन्यजाति जो मेरे नाम के कहलाते हैं, प्रभू को ढूँढ़ें, यह वही प्रभु कहता है जो जगत की उत्पत्ति से इन बातों का समाचार देता आया है “परमेश्वर आज यही काम कर रहा है वह अन्यजातियों में से अपने नाम के निमित्त एक लोग तैयार कर रहा है अर्थात् परमेश्वर संसार में से मसीह के विश्वासियों को बुला है और पवित्र आत्मा उन्हें बपतिस्मा देकर विश्वासियों की देह अर्थात् कलीसिया में जोड़ रहा है

अतः जब शिष्यों ने यीशु से पूछा कि वह राज्य की स्थापना उसी समय करेगा तब उसने उनसे कहा कि उस समय का चर्चा विषय यह नहीं था नहीं आज यह चर्चा विषय है अनेक जन मुझसे कहते हैं, “क्या आप नहीं सोचते कि मसीह शीघ्र आनेवाला है” मैं आपको एक गुप्त बात समझाता हूँ यह हमारे बीच में रहे मैं निश्चय ही विश्वास करता हूँ कि वह शीघ्र आनेवाला है, तथापि मुझे यह अधिकार नहीं कि आपसे कहूँ कि वह शीघ्र आनेवाला है, क्योंकि मैं नहीं जानता हूँ हमारे प्रभु ने कहा था कि समयों को जानना हमारे लिए नहीं है हमारे लिए यह महत्वपूर्ण बात नहीं है

मैं भविष्यद्वाणी में विश्वास करता हूँ तथापि मेरा मानना यह है कि उस पर भी आवश्यकता से अधिक बल दिया जा सकता है विश्वास में दृढ़ होने के लिए आपको भविष्यद्वाणी से अधिक अध्ययन की आवश्यकता है

तो फिर आज हमारा काम क्या है? ध्यान दीजिए कि प्रभु ने उन्हें झिड़का नहीं वरन् उन्हें बताया कि उसके मन में कुछ और बात है हमारे लिए करने को कुछ है समयों या कालों को जानना हमारा काम नहीं है वह परमेश्वर के अधिकार में है परन्तु यहां आपका एक कार्य है

प्रेरितों के काम – 1:8 (कृपया पढ़ें)

यह आदेश आज भी ज्यों का त्यों है यह एक सामुदायिक आदेश नहीं है यह कलीसिया को दिया गया आदेश नहीं है यह प्रत्येक विश्वासी के लिए एक व्यक्तिगत आदेश है यह पवित्र आत्मा के अवतरण से पूर्व शिष्यों को दिया गया था यह आज भी आपके मेरे लिए सीधा आदेश है यह हमारा काम है कि संसार में वचन का प्रचार करें हम यह नहीं कह सकते कि यह कलीसिया का उत्तरदायित्व है कि मिशनरी भेजे और सुसमाचार सुनाए और बैठ कर अन्यो को सेवा करते देखें सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि क्या आप परमेश्वर के वचन का प्रसारण कर रहे हैं? क्या आप पृथ्वी के छोर तक जाकर सुसमाचार के गवाह बने हैं? या आप कि मिशनरी या रेडियो कार्यक्रम को सहयोग देते हैं? क्या आप व्यक्तिगत रूप से सहभागी हैं? आज अनेक जन उसके पुनः आगमन के समय और काल की चर्चा करते हैं परन्तु वे वचन फैलाने में सहभागी होना नहीं चाहते हैं यह उसका आदेश है यह शिष्यों के लिए ही नहीं, आपके और मेरे लिए भी है मेरा विचार तो यह है कि यदि प्रभु अभी इसी समय प्रकट हो तो वह समय और काल की चर्चा नहीं करेगा, वह सीधा सुसमाचार की गवाही की चर्चा करेगा वह चाहता है कि मनुष्य उद्धार पाएं यह हमारा दूतकार्य है

सुसमाचार प्रचार को फैलाने के लिये हमें सामर्थ्य की आवश्यकता है उसने प्रतिज्ञा की है “तुम सामर्थ्य पाओगे” हमें प्रभु की अगुवाई की आवश्यकता है यद्यपि यह हमारा उत्तरदायित्व है कि परमेश्वर के वचन का प्रचार करें, हम में सामर्थ्य नहीं है कलीसिया में सामर्थ्य नहीं है परन्तु पवित्र आत्मा में सामर्थ्य है यह पवित्र आत्मा ही है जो किसी व्यक्ति, या कलीसिया या रेडियो कार्यक्रम के द्वारा काम करता है अब प्रश्न यह है कि क्या हम उसे काम करने देते हैं? “जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे”

“मेरे गवाह होंगे” हमारी गवाही मसीह की है वही ध्यान का केन्द्र है हमारे संदर्भ में यरुशलेम का अर्थ है अपने नगर में सम्पूर्ण यहूदा अर्थात् पूरे समुदाय में और सामरिया का अर्थ है उनमें भी जिनसे हमारे संबंध नहीं है यद्यपि इन मनुष्यों से हमारा सामाजिक संबंध नहीं है, हमें उनमें भी सुसमाचार सुनाना है बहुत लोग ऐसे हैं जो हमसे संबंध रखना नहीं चाहते हैं अनेक जन हैं जो नहीं चाहते कि मैं उनके आस-पास भी दिखाई दूँ क्योंकि मैं उनकी जीवनशैली की आलोचना करूँगा परन्तु यह हमारा सौभाग्य और उत्तरदायित्व है कि हम उनमें सुसमाचार प्रचार करें जो हमसे संबंध रखना नहीं चाहते हैं

अन्त में मसीह की गवाही पृथ्वी की छोर तक हों हम कभी न भूलें कि यह प्रभु की इच्छा है, क्योंकि उसने कहा है कि यदि हम उससे प्रेम करते हैं तो उसकी यह आज्ञा वैयक्तिक है हम भीड़ पर इसका उत्तरदायित्व नहीं डाल सकते हैं हम यह न कहें कि कलीसिया कर रही है अतः मुझे करने की आवश्यकता नहीं मेरे मित्रों, आप इसमें कितने सहभागी हैं? आपकी मसीही गवाही क्या है?

स्वर्गारोहण और यीशु के लौटने की प्रतिज्ञा

प्रेरितों के काम – 1:9 (कृप्या पढ़ें)

हमारे प्रभु की सेवा में मसीह यीशु का स्वर्गारोहण एक महत्वपूर्ण एवं सार्थक चमत्कार है, विशेष करके इस अंतरिक्ष युग में जब हमारी आँखें उससे अलग अंतरिक्ष की यात्रा की ओर लगी हुई हैं अंतरिक्ष यात्रा वास्तव में नई यात्रा नहीं है यीशु तो वहाँ यों ही चल पड़ा था उसे न तो विभोचन मंच और अंतरिक्ष वस्त्र और रॉकेटों की आवश्यकता नहीं थी

वहाँ उसे ग्रहण करने के लिए केवल एक बादल था यह बादल क्या था? क्या यह वर्षा का बादल था? नहीं, वह षकीना महिमा थी वही महिमा का बादल जो मिलाप वाले तम्बू में रहता था उसने अपनी महायाजकीय प्रार्थना में कहा था यूहन्ना 17:5, “अब हे पिता, तू अपने साथ मेरी महिमा उस महिमा से कर

जो जगत की सृष्टि से पहले, मेरी तेरे साथ थीं”, इस संसार में जब उसका जन्म हुआ था तब उसे कपड़ों के टुकड़ों से लपेटा गया था जब इस संसार से गया तब वह महिमा से आवृत था वह इस प्रकार पिता के दाहिने हाथ पहुँचां

अभी विषय यह दृष्ट देख ही रहे थे कि दो स्वर्गदूत प्रगट हुए वे पुरुशरूप में थे और उनका सन्देश कोई विषेश नहीं थां

प्रेरितों के काम – 1:10–11 (कृप्या पढ़ें)

यह महिमा से आवृत यीशु जो स्वर्ग में गया वह इसी महिमा के साथ, उसी स्थान पर लौट कर आयां जकर्याह 14:4 में लिखा हैं, “उसी दिन वह जैतून के पर्वत पर पांव रखेगा, जो पूर्व की ओर यरुषलेम के सामने हैं; तब जैतून का पूर्व लेकर पश्चिम तक बीचोबीच से फटकर बहुत बड़ा खड्डा हो जाएगा; तब और आधा दक्षिण की ओर हट जाएगां” वह उसी स्थान से गया था और उसी स्थान पर उतरेगां

आत्मा की प्रतीक्षा

प्रेरितों के काम – 1:12 (कृप्या पढ़ें)

“एक सब्त के दिन की दूरी” अर्थात एक मील से कम यही कारण था कि वे उत्सव के दिनों में मन्दिर के अति निकट होते थे जैतून पर्वत संभवतः आराधकों से भरा होता थां पर्व के समय के लगभग हजारों की संख्या में वहां होते थे क्यों? क्योंकि वे मन्दिर से एक सब्त के दिन की ही दूरी पर रहना चाहते थें

प्रेरितों के काम – 1:13–14 (कृप्या पढ़ें)

मैं बहुत खुष हूँ कि यीशु की माता मरियम वहां थी उस पर लगे दाग इस समय सब धुल गए होंगे यह अति स्पष्ट था कि यीशु परमेश्वर का पुत्र था और कुंवारी से जन्मा थां जैसा मरियम का कहना थां

विश्यों एवं अन्य विष्वासियों की मानसिकता इस समय एकता, प्रार्थना और प्रतीक्षा करने की थीं

आज इस समय को पुनः ज्यों का त्यों प्रगट करना संभव नहीं स्मरण रखें कि यह समय उसके स्वर्गारोहण और पवित्र आत्मा के आगमन के मध्य का समय था आप और मैं उस समय में वास नहीं कर रहे हैं अतः उसकी प्रति उत्पन्न करना असंभव है हम पवित्र आत्मा के आने की प्रतीक्षा में नहीं हैं वह तो 2000 वर्ष पूर्व आ चुका है

नये शिष्य की नियुक्ति

प्रेरितों के काम – 1:15–18 (कृप्या पढ़ें)

यह शिमोन पतरस अपने विष्वासी भाइयों को संबोधित कर रहा है पवित्र आत्मा अभी तक आया नहीं था उसे पवित्र आत्मा की आवश्यकता थी, आपको और मुझे भी है वह यहूदा का सजीव चित्रण प्रस्तुत करता है

यदि मत्ती 27:5 और इस अंश में असमानता है तो इस कारण कि फांसी लगाने के पश्चात संभवतः उसका फन्दा या तो टूट गया था, या खुल गया और वह चट्टानों पर गिर गया जिससे उसका पेट फट गया और उसकी सब आतड़ियां निकल पड़ीं अब सिक्के जो उसने वहाँ फेंक दिये थे वे अधर्म की कमाई थे और उन्हें मन्दिर के कोश में रखना व्यवस्था विरोधी था ऐसा धन जनहित के लिए काम में लिया जा सकता था अब यहूदा को दफ़न की आवश्यकता भी थी अतः वह पैसा खेत खरीदने के लिए काम में लिया गया कि कब्रस्तान बनाया जाए हमारी भाषा में, सुपारी के पैसों से खरीदी गई भूमि अर्थात् खून की भूमि – हकलदमां

प्रेरितों के काम – 1:19–20 (कृप्या पढ़ें)

यह व्यवस्था सदैव संदिग्ध है क्या यह आवश्यक था कि पतरस इस चुनाव आयोजन करता कि यहूदा के स्थान पर किसी और को रखा जाए? मेरे विचार में ऐसा नहीं है

प्रेरितों के काम – 1:21–22 (कृप्या पढ़ें)

मैं स्पष्ट समझ सकता हूँ कि यह न तो पवित्र आत्मा की अगुवाई थी और न ही परमेश्वर का मार्गदर्शन कि चिट्ठियां डाली जाएं क्या मतिyah ही वास्तव में यहूदा के स्थान पर रखा गया था? मेरे विचार में तो ऐसा नहीं था मेरे विचार में तो यीशु ने अपने रहते हुए ही यहूदा के स्थान पर किसी की नियुक्ति कर दी थी क्योंकि हम मतिyah के विषय आगे कुछ नहीं पढ़ते हैं उसकी सेवा का कोई भी लेखा नहीं है मेरे विचार में पवित्र आत्मा ने मतिyah को अनदेखा किया था मेरा तो विष्वास यह है कि प्रभु ने पौलुस को यहूदा के स्थान में चुना था अब आप पूछेंगे कि मैं किस अधिकार से ऐसा कह सकता हूँ ध्यान दीजिए कि पौलुस गलातिया प्रदेश की कलीसियाओं को क्या लिखता है— गलातियों 1:1, “जो न मनुष्यों की ओर से और न मनुष्य के द्वारा, वरन् यीशु मसीह और परमेश्वर पिता के द्वारा, जिसने उसको मरे हुआ में से जिलाया, प्रेरित हैं” पौलुस स्पष्ट कहता है कि वह प्रभु यीशु मसीह और पिता परमेश्वर के द्वारा चुना गया था प्रभु ने यह कैसे किया? पवित्र आत्मा के द्वारा जिसे उसने संसार में भेजा था पौलुस की सेवा से यह सिद्ध होता है कि वही था जो यहूदा के स्थान के योग्य था निःसन्देह अधिकांश बाइबल टीकाकार मुझ से असहमत हैं परन्तु यह मेरा अपना विचार है जो मैं आपको सुना रहा हूँ

यह ध्यान देने योग्य है और मैं फिर कहता हूँ कि प्रेरितों के काम अध्ययन एक चारों सुसमाचार को एक साथ केन्द्रित करता है मत्ती का समापन पुनरुत्थान से होता है, मरकुस का स्वर्गारोहण से, लूका का पवित्र आत्मा के आने की प्रतीक्षा से और यूहन्ना का यीशु के पुनः आगमन से प्रेरितों के काम 1 में यह चारों बातें विहित है चारों सुसमाचार प्रेरितों के काम की पुस्तक में केन्द्रित हैं और प्रेरितों के काम की पुस्तक सुसमाचार और पत्रियों के मध्य सेतू(एकपूल) भी हैं